अध्याय
1

कर्मयोगी लालबहादुर शास्त्री

डॉ. शंकर दयाल शर्मा

शास्त्री जी के नाम के साथ 'कर्मयोगी' विशेषण जोड़ना बिल्कुल उपयुक्त है,क्योंकि मुझे तो उनका सारा जीवन ही कर्म से भरा हुआ मालूम पड़ता है। शास्त्री जी सामान्य परिवार से ऊपर उठकर देश के प्रधानमंत्री के जिस महत्वपूर्ण पद तक पहुँचे ,उसका रहस्य उनके कर्मयोगी होने में ही छिपा है। वे उन लोगों में से नहीं थे,जिन्हें जीवन का बना बनाया आसान रास्ता मिल जाता है। वे उन लोगों में से भी नहीं थे, जो भाग्य पर भरोसा करके बैठे रहते हैं और अचानक कभी सफलता मिल जाती है। बल्कि वे उन लोगों में से थे, जिनको अपनी हथेली की लकीरों के बजाय अपने चिंतन और कर्म की शक्ति पर अधिक भरोसा होता है और वे क्रमश: अपने जीवन का रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते हैं। शास्त्री जी के लिए कर्म ही ईश्वर था और इसके प्रति वे बिना किसी फल की आशा किए संपूर्ण भाव से समर्पित रहते थे। यहाँ तक कि जब भी उन्हें फल की प्राप्ति के अवसर मिले, तब भी उन्होंने उस ओर हमेशा उपेक्षित दृष्टि रखी। उनका जीवन-दर्शन 'गीता' के निष्काम कर्मयोगी का प्रतिरूप था। इसलिए मैं समझता हूँ कि उन्हें केवल कर्मयोगी के बजाय 'निष्काम कर्मयोगी' कहना कहीं अधिक उपयुक्त होगा।

अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ आस्था, उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कर्म का भाव तथा उस कर्म के प्रति संपूर्ण समर्पण-ये तीन बातें मुझे उनके संपूर्ण चरित्र तथा जीवन-दर्शन में दिखाई पड़ती हैं। अपने एक भाषण में उन्होंने इसी तरह के विचार व्यक्त करते हुए कहा था ''यहाँ तक कि भले ही आप राजनीतिक क्षेत्र या सामाजिक क्षेत्र या किसी अन्य क्षेत्र में कार्य करते हैं, यदि आप उसमें सफल होना चाहते हैं, अपने दायित्वों का पूरी तरह से निर्वाह करना चाहते हैं, तो आपके कार्य और समर्पण तथा भक्ति और कर्म में समन्वय होना चाहिए।''

मैं शास्त्री जी की सफलता का रहस्य उनके इसी महत्वपूर्ण चिंतन में मानता हूँ। साथ ही यह भी मानता हूँ कि किसी भी व्यक्ति , समाज और देश के विकास का रहस्य इसी भक्ति और कर्म के सिद्धांत में निहित है।

शास्त्री जी का संपूर्ण जीवन श्रम, सेवा, सादगी और समर्पण का अनुपम उदाहरण है। उनके ये गुण केवल उनके कार्यों और विचारों में ही अभिव्यक्ति नहीं पाते थे, बल्कि उनको देखने से ही इन सभी भावों का अहसास हो जाता था। उनमें विचारों का अनोखा समन्वय था। वे जो कुछ कहते थे, वही करते थे। जो कुछ भी करते थे, वह एकमात्र राष्ट्र-लाभ की भावना से प्रेरित होकर करते थे। मुझे लगता है कि यह उनके चरित्र की एक बहुत बड़ी विशेषता थी, जिसके कारण देशवासी उन पर इतना अधिक विश्वास करते थे और उन्हें चाहते भी थे। पंडित नेहरू की समृद्ध राजनीतिक विरासत को सँभालना और उसे आगे ले जाने का काम कम कठिन नहीं था। लेकिन देश ने उस समय यह साफ-साफ देखा कि इसे सँभालने की ताकत शास्त्री जी में ही है और शास्त्री जी ने अपने निर्मल चरित्र और दृढ़ संकल्प शक्ति द्वारा देश की इस आकांक्षा को पूरा किया।

शास्त्री जी की एक सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे एक सामान्य परिवार में पैदा हुए थे, सामान्य परिवार में ही उनकी परवरिश हुई और जब वे देश के प्रधानमंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद पर पहुँचे, तब भी वे सामान्य ही बने रहे। विनम्रता, सादगी और सरलता उनके व्यक्तित्व में एक विचित्र प्रकार का आकर्षण पैदा करती थी। इस दृष्टि से शास्त्री जी का व्यक्तित्व बापू के अधिक करीब था और कहना न होगा कि बापू से प्रभावित होकर ही सन् 1921 में उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ी थी। शास्त्री जी पर भारतीय चिंतकों ,डॉ. भगवानदास तथा बापू का कुछ ऐसा प्रभाव रहा कि वह जीवनभर उन्हीं के आदर्शों पर चलते रहे तथा औरों को इसके लिए प्रेरित करते रहे। शास्त्री जी के संबंध में मुझे बाइबिल की वह उक्ति बिल्कुल सही जान पड़ती है कि विनम्र ही पृथ्वी के वारिस होंगे।

शास्त्री जी ने हमारे देश के स्वतंत्रता –संग्राम में तब प्रवेश किया था, जब वे एक स्कूल में विद्यार्थी थे और उस समय उनकी उम्र 17 वर्ष की थी। गांधी जी के आह्वान पर वे स्कूल छोड़कर बाहर आ गए थे। इसके बाद काशी विद्यापीठ में उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। उनका मन हमेशा देश की आजादी और सामाजिक कार्यो की ओर लगा रहा। परिणाम यह हुआ कि सन् 1926 में वे 'लोक सेवा मंडल' में शामिल हो गए ,जिसके वे जीवन–भर सदस्य रहे। इसमें शामिल होने के बाद से शास्त्री जी ने गांधी जी के अनुरूप अछूतोद्धार के काम में अपने आपको लगाया। यहाँ से शास्त्री जी के जीवन का एक नया अध्याय प्रारंभ हो गया। सन् 1930 में जब 'नमक कानून तोड़ो आंदोलन' शुरू हुआ ,तो शास्त्री जी ने उसमें भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें जेल जाना पड़ा। यहाँ से शास्त्री जी की जेल यात्रा की जो शुरूआत हुई तो वह सन् 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' तक निरंतर चलती रही। इन 12 वर्षो के दौरान वे सात बार जेल गए। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनके अंदर देश की आजादी के लिए कितनी बड़ी ललक थी। दूसरी जेल यात्रा उन्हें सन् 1932 में किसान आंदोलन में भाग लेने के लिए करनी पड़ी। सन् 1942 की उनकी जेल यात्रा 3 वर्ष की थी जो सबसे लंबी जेल यात्रा थी।

इस दौरान शास्त्री जी जहाँ एक ओर गांधी जी द्वारा बताए गए रचनात्मक कार्यों मे लगे हुए थे, वहीं दूसरी ओर पदाधिकारी के रूप में जनसेवा के कार्यों में लगे रहे। सन् 1935 में वे संयुक्त प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव बनाए गए,जिस पद पर वे 1938 तक रहे। किसानों के प्रति उनके मन में विशेष लगाव था। इसीलिए उनको सन् 1936 में किसानों की दशा का अध्ययन करने वाली एक कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया। पूरी लगन के साथ काम करके उन्होंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की ,जिसमें जमींदारी उन्मूलन पर विशेष जोर दिया। इसके बाद 6 वर्षों तक वे इलाहाबाद की नगरपालिका में किसी न किसी रूप से जुड़े रहे। मैं समझता हूँ कि इस अनुभव ने भी शास्त्री जी के व्यक्तित्व और चिंतन को नागरिकों की समस्याओं से निकट से परिचित कराया। उनके पास ग्रामीण जीवन का अनुभव था। अब इसके साथ ही इलाहाबाद नगरपालिका ने जनसेवा का भी अनुभव जोड़ दिया था। लोकतंत्र की इस आधारभूत इकाई में कार्य करने के कारण वे देश की छोटी–छोटी समस्याओं और उनके निराकरण की व्यावहारिक प्रक्रिया से अच्छी तरह परिचित हो गए थे। कार्य के प्रति निष्ठा और मेहनत करने की अदम्य क्षमता के कारण सन् 1937 में वे संयुक्त प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा के लिए निर्वाचित हुए। सही मायने में यहीं से शास्त्री जी के संसदीय जीवन की शुरूआत हुई, जिसका समापन देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचने में हुआ। शास्त्री जी को भारतीय राजनीति की इतनी सही और गहरी पकड़ थी कि श्रीमती इंदिरा गांधी ने ''उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते हुए कहा था कि उन्हीं के मार्ग–दर्शन में मेरा राजनीतिक जीवन शुरू हुआ।''

देश की आज़ादी के बाद उत्तर प्रदेश तथा केंद्र में शास्त्री जी भिन्न –भिन्न पदों पर रहे। उत्तर प्रदेश में उन्हें गृह–मंत्री बनाया गया। बाद में पंडित नेहरू के अनुरोध पर वे केंद्र में आ गए। केंद्र में उन्होंने रेल और परिवहन,संचार,वाणिज्य, उद्योग और गृह मंत्रालय जैसे महत्त्वपूर्ण पद सँभाले। इन पदों पर रहते हुए शास्त्री जी ने अपनी जिस प्रशासकीय दक्षता का प्रमाण दिया, वह हमारे देश के लिए एक उदाहरण है। अपने मंत्रालयों के कार्यो में उनका दृष्टिकोण अत्यंत व्यावहारिक तथा सभी प्रकार की औपचारिकताओं से परे होता था। वे अपने को कभी भी अपने पद के कारण ऊँचा नहीं मानते थे। उनकी बड़ी सीधी–सी धारणा थी कि वे जनता के शासक नहीं ,बल्कि जनता के सेवक हैं। ऐसी भावना से कार्य करने के कारण उन्हें मंत्रालय में तो लोकप्रियता मिली ही, साथ –ही– साथ सारे देश में भी लोकप्रियता मिली। इसी लोकप्रियता का परिणाम था कि पंडित नेहरू के निधन के बाद देश ने उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में स्वीकार किया। देश के इस महत्त्वपूर्ण पद पर रहते हुए केवल 19 महीने के छोटे– से समय में उन्होंने जितनी सफलताएँ और लोकप्रियता प्राप्त की, वह एक उदाहरण है। शास्त्री जी के सामने अपना उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट था । उसमें किसी प्रकार का धुँधलापन या भटकाव नहीं था। वे हमारे देश के अत्यंत महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे और इन पदों पर रहते हुए स्वाभाविक रूप से वे अधिकार संपन्न भी थे। लेकिन उन्होंने हमेशा आत्मसंयम से काम लिया तथा अधिकारों से अधिक कर्त्तव्यों को महत्व दिया। शायद इसीलिए शास्त्री जी इतने अधिक लोकप्रिय हो सके। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में 19 दिसंबर 1964 को छात्रों को संबोधित करते हुए कुछ इसी तरह के विचार व्यक्त किए थे, ''आपके

भविष्य की मंजिल चाहे जो कुछ भी हो , आप में से प्रत्येक को यह सोचना चाहिए कि आप सबसे पहले देश के नागरिक हैं। यह आपको संविधान द्वारा प्रदत्त कुछ अधिकार देता है, लेकिन इससे कुछ कर्त्तव्यों का भी बोझ आता है, जिसे समझना चाहिए। हमारा देश प्रजातांत्रिक है,जो निजी स्वतंत्रता देता है, लेकिन इस स्वतंत्रता का उपयोग एक व्यवस्थित समाज के हित में स्वेच्छा से लगाए गए प्रतिबंधों के तहत होना चाहिए और इन स्वैच्छिक प्रतिबंधों का उपयोग और प्रदर्शन प्रतिदिन के जीवन में होना चाहिए'' अधिकार, कर्तव्य और आत्मसंयम के बारे में यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात शास्त्री जी ने कही थी जिसे आज याद रखने की जरूरत है।

अभ्यास

1. लालबहादुर शास्त्री को निष्काम कर्मयोगी क्यों कहा गया ?
2. ''शास्त्री जी अत्यंत लोकप्रिय थे ।'' उनकी लोकप्रियता के कारण बताइए।
3. शास्त्री जी के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. शास्त्री जी ने किन रूपों में प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया?
5. ''शास्त्री जी श्रम ,सेवा,सादगी और समर्पण की प्रतिमूर्ति थे ।'' उदाहरण देकर समझाइए।
6. संवैधानिक अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति शास्त्री जी के क्या विचार थे? स्पष्ट कीजिए।
7. शास्त्री जी देश के प्रधानमंत्री कब बने?
8. इस पाठ से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. लालबहादुर शास्त्री जी के जीवन के प्रेरक प्रसंग पुस्तकों से प्राप्त कीजिए और उनकी फाइल बनाइए।
2. महापुरुषों के जीवन से संबंधित पुस्तकें पढ़कर उनके प्रेरक प्रसंगों का संकलन कीजिए ।
3. 'यदि आप देश के प्रधानमंत्री हों तो'- अपने आचरण ,विचार,व्यवहार,लक्ष्य आदि के विषय में लिखिए।
4. यह पाठ डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा लिखित हैं। डॉ. शंकर दयाल शर्मा हमारे देश के राष्ट्रपति थे। उनका जीवन परिचय खोजकर लिखिए।

***